आंचलिकता के विविध आयाम

राहुल झा
18 इमाम बक्श लेन,
कोलकाता – 06 मो.– 9681005168
ईमेल– rahuljha34@gmail.com

हमारे यहाँ संस्कृत तथा अन्य भाषा रूपों में अंचल शब्द का प्रयोग बहुत पहले से होता रहा है। वहाँ इसके अनेक अर्थ पाए जाते हैं। संस्कृत की अच् धातु में 'अलंच' प्रत्यय लगने पर अंचल' शब्द निष्पन्न होता है। यह व्याकरणिक दृष्टि से एकवचन पुल्लिंग एवम् समूहवाची संज्ञा शब्द रूप है। अंचल शब्द का सीधा और स्पष्ट अर्थ है जनपद या क्षेत्र विशेष जो अपने में एक पूर्ण भौगोलिक इकाई होता है। पदमचन्द्र कोश में कोशकार ने अंचल शब्द का अर्थ वस्त्र का छोर कोने का भाग, कपड़े का कोना पल्ला ही लिया है। संस्कृत इंग्लिश डिक्शनरी में भी अंचल का अर्थ वस्त्र के छोर से ही लिया गया है। भाषा शब्दकोष में अंचल का अर्थ है साड़ी का छोर जो सामने रहता है पल्ला आंचल या अँचरा, किनारा एवम् सीमा का समीपवर्ती भाग।[1] अंचल या अंग्रेजी की रोजन का प्रयोग सामान्यतः किसी क्षेत्र या ग्राम के सीमांत प्रदेश के लिए किया जाता है। जब किसी परिसर क्षेत्र विशेष या अंचल को लेकर लिखी जानेवाली पद्धति आरम्भ हुई है। तब आंचलिकता शब्द विशेष अर्थ ग्रहण करने लगा। शनैः शनैः आंचलिकता कथा साहित्य की एक विधा के रूप में प्रचलित हुई। हिन्दी में आंचलिकता उपन्यास के सन्दर्भ में उसके कथा, भाषा शैली व शिल्पगत विशेषताओं को प्रकाशित करता है।

आंचलिकता एक भाववाचक संज्ञा है। स्पष्टता इसका सम्बन्ध अंचल सम्बन्धी भावों, गुण, दोषों, कार्यों आदि से है। आंचिलकता हिन्दी के समीक्षा क्षेत्र में अपेक्षाकृत एक नवीन पारिभाषिक शब्द है। आंचलिकता की परिभाषा अंचल के आंचलिक विशेषण में सामाविष्ट है। आंचलिक विशेषताओं की अभिव्यक्ति ही आंचलिकता है। आंचलिकता की परिभाषा में दो बातों का विशेष महत्त्व है। १) आंचल का अन्तराल और २) आंचल का बाहय रूप। डॉ. ओमानन्द सारस्वत के अनुसार आंचलिकता एक प्रकार की अन्तर्मुखता है। जहाँ व्यापक यथार्थ को छोड़कर मर्यादित यथार्थ को महत्त्व दिया जाता है। जिससे व्यापक यथार्थ व्यंजित होता रहे। यह आंतरिक तत्व मूलतः अंचल की सांस्कृतिक आत्मा से सम्बन्ध है। कुछ लोग आंचलिकता को प्रवृत्ति विशेष मानते हैं। जैनेन्द्रकुमार ने इसे प्रवृत्ति मानकर इसका स्पष्टीकरण इस प्रकार किया प्रायः आंचलिक प्रवृत्ति वह दृष्टि है जिसके केंद्र में अमुक पात्र या चरित्र उतना नहीं जितना वह स्वयम् भू-भाग अंचल है। पात्र स्वयम् में इष्ट नहीं मानो अमुक समष्टि के जीवन की यथार्थता को उभार देने में ही उसकी चरितार्थता है।[2] इससे यह स्पष्ट होता है कि आंचलिकता किसी अंचल विशेष का आंचलिक निरूपण है। किसी जनपद विशेष की माटी को महक और मनःस्थिती का सजीव चित्रण ही आंचलिकता कहलाता है।

प्रत्येक भूमि-भाग की मिट्टी की एक खास महक होती है और उस मिट्टी में पनपी हुई वनस्पतियों के पत्ते-पत्ते और फूल-फूल में एक विशेष गन्ध होती है। उसी के अनुरूप वहाँ के समस्त जीवधारियों, मानव प्राणियों में भी अपनी अपनी एक अलग मनःस्थिति या गन्ध होती है जो किसी अन्य भूमि-भाग में उगे हुए फूल पत्ते और प्राणियों की गन्ध से भिन्न होने के कारण अपनी एक अलग विशिष्टता रखती है। यह गन्ध उस देश के निवासियों की भाषा, आचार-विचार तथा मानसिकता में प्रतिबिम्बित होती है।[3] इस प्रकार किसी विशिष्ट भू-भाग उसके वातावरण तथा निवासियों या प्राणियों के व्यक्तित्व सम्बन्ध की आंचलिक अभिव्यक्ति ही आंचलिकता है। आंचलिकता के स्वरूप निर्धारण, उद्घाटन, प्रस्तुतिकरण आदि में अनेक तत्वों का सामूहिक योगदान होता है। डॉ नगीना जैन ने अपने शोध आंचलिकता और हिन्दी उपन्यास आंचलिकता के अर्थ को गहराई विचार किया उनके अनुसार आंचलिकता विशिष्ट दृष्टिकोण है अंचल या विशेष सम्पूर्ण जीवन प्रणाली ऐतिहासिक वैज्ञानिक धारणा प्रस्तुत करता किसी अंचल की अन्तरात्मा को प्रकट करने के आन्तरिक उपरकणों के साथ उसके उपकरणों का समर्थन आवश्यक होता आंचलिकता संजीव रूप देने वे सभी सम्मिलित किए जा सकते हैं क्षेत्रविशेष जनजीवन सांगोपांग तथा सम्पूर्ण चित्र विशेषताओं के उभारने सहायता देते वस्तुतः वेशभूषा, खानपान, रहन-सहन आदि सजीव सबल अभिव्यक्ति योग देनेवाले उपकरण ऑचिलकता के तत्व कहे सकते आंचलिकता का सर्वप्रथम सर्वप्रमुख तत्व अंचल विशेष स्थिति अंचल कल्पना निर्जन नहीं की जा सकती इस दृष्टि जनपद अंचल सभिप्राय पर्याय कहा जा सकता है। निर्जन जंगल या प्रकृति एकांत वर्णन आंचलिकता अन्तर्गत गृहीत नहीं किया सकता किसी अंचल विशेष सभ्यता तथा संस्कृति चित्रण अनेकानेक वस्तुओं समावेश होता है। उस क्षेत्र जनपद स्थानों, वृक्षों, तरकारियों, पशुओं, पक्षियों, सवारियों, विचरण, स्थानों, भोज्य पदार्थों, वस्त्राभूषणों केशविन्यासों, गन्ध तथा अन्य श्रृंगार और लिखने व्यवस्थाओं, आश्रमों, मनोविनोद के साधनों, कूदों, क्रिडाओं, लोकविधानों, ललितकलाओं, त्योहारों, पर्वों, उत्सवों, लोकाचारों, विश्वासों, मान्यताओं पौराणिक आस्थाओं व्यवसायिक वर्गों, भिखारियों, अछूतों, राजनीतिक मान्यताओं, साम्प्रदायिक विचारों, दार्शनिक विचारों तथा जीवन दृष्टिकोणों आदि तथ्यों

विश्लेषण प्रत्यक्ष या चित्रण किया जाता है।[4]स्वाभाविकता की रक्षा लिए होना आंचलिकता का एक अंग है। आंचलिकता की अभिव्यक्ति भाषा के माध्यम से बड़ी सहज स्वाभाविक होती विशेष रूप स्थानीय बोली के प्रयोग से आंचलिकता लाई जाती है। विशेष यथार्थ भाषा आपने ग्रामीण शब्दों मुहावरों लोकोक्तियों, उक्तियों आदि के आंचलिकता साकार करने सहायक सिद्ध होती है। उस धारणा प्रकाश में कहा सकता है 'आंचलिकता' किसी अंचल विशेष सांगोपांग जीवन पैठकर उसकी आत्मा की झलक पाने का एक सबसे सार्थक प्रयत्न या साधन है। उपन्यास आंचलिक विशेषण लगने उसको आंचलिक उपन्यास कहा जाता है। आंचलिक उपन्यास सरलतम परिभाषा यही हो सकती है कि जो उपन्यास आंचलिक विशेषताओं युक्त वह आंचलिक उपन्यास है। रचना तो उपन्यास होती ही पर जनपदीय जीवन का चित्र प्रस्तुत करेगी। यह चित्रण जितना सूक्ष्म तलस्पर्शी होगा आंचलिक उपन्यास उतना ही श्रेष्ठ होगा। वस्तुतः आंचलिक उपन्यास परिभाषा का केंद्र आंचलिक ही है।

सामान्य सामाजिक उपन्यासों अपेक्षा इसमें अंचल एक विशिष्ट दृष्टिकोण से परखने, देखने और प्रस्तुत करने कार्य प्रधान होता है। आंचलिक उपन्यास की सर्वमान्य परिभाषा का स्वरूप अभी निर्मित नहीं हो सका इसलिए कुछ परिभाषाओं का पर्यालोचन करना उचित रहेगा।यथार्थदवादी दृष्टि एक सीमित अंचल के असाधारण विवरणों को प्रस्तुत करनेवाला उपन्यास आंचलिक उपन्यास है। इसके साथ ही उसमें विस्मयकारिता, असामान्य अपरिचित सजीव समग्र चित्रण तथा वातावरण की प्रधानता रहती है। दूसरे शब्दों इसे इस प्रकार कहा जा सकता कि एक सीमित अंचल या क्षेत्र के सर्वांगीण जीवन को वस्तुन्मुखी दृष्टि प्रस्तुत करने का उपक्रम आंचलिक उपन्यास की उपयुक्त परिभाषा सकती है।[5]जिन उपन्यासों में किसी विशिष्ट प्रदेश के जनजीवन का समग्र विन्यात्मक चित्रण हो उन्हें आंचलिक उपन्यास कहा जा सकता है।[6] कुछ उपन्यासों में किसी प्रदेश विशेष का यथातथ्य और बिम्बात्मक चित्रण प्रधानता प्राप्त कर लेता है उन्हें प्रादेशिक या आंचलिक उपन्यास कहा जाता है।[7] आंचलिक उपन्यास उन उपन्यासों को कहते हैं जिनमें क्षेत्र विशेष के जनजीवन का सांग और समूचा चित्र प्रस्तुत किया जाता है।किसी अंचल विशेष की भौगोलिक, सामाजिक तथा सांस्कृतिक विशेषताओं का अंकन करना आंचलिक उपन्यास का प्रमुख उद्देश माना जाता है।[8] आंचिलक उपन्यासों में किसी विशिष्ट जनपद या क्षेत्र के जीवन रहन-सहन, रीति-रिवाज, अन्धविश्वास, लोकगीत, उत्सव आदि स्थानिय विशिष्टताओं के विकास और उन परिस्थितियों का जो युग चेतना का प्रतिनिधित्व करती है का चित्रण किया जाता है।[9] आंचलिक उपन्यासों को हम किसी अंचल विशेष की संस्कृति का सरस और सुखद चित्रण मान सकते हैं।[10] उपन्यास जब क्षेत्र विशेष अंचल की लोक संस्कृति से बंधकर स्थानिक रंगत से युक्त जीवन प्रस्तुत करता है उसे आंचलिक उपन्यास की संज्ञा प्राप्त होती है। [11]आंचलिक उपन्यासों की सबसे बड़ी विशेषता निश्चय ही अंचल विशेष की लोक संस्कृति का चित्रण करना है किन्तु यह चित्रण शिल्पगत न होकर भावगत है।[12] अंचल विशेष की भूमि तथा वहाँ की सांस्कृतिक व्यवस्था के प्रति गम्भीर अनुभूति के फलस्वरूप इस प्रकार के उपन्यास लिखे जाते हैं।[13]

अंचल से सम्बन्ध रखनेवाली कोई भी वस्तु आंचलिक कही जा सकती है। आज अंचल शब्द का प्रयोग क्षेत्र' या अंग्रेजी के रीजनल' के अर्थ में होने लगा है। अंतः व्युत्पत्ति लभ्य अर्थ इतना ही कहा जा सकता है कि जिस उपन्यास में किसी क्षेत्र विशेष के समाज और जीवन का उसी क्षेत्र की भाषा में ज्यों का त्यों चित्रण उसे क्षेत्रीय उपन्यास' 'आंचलिक उपन्यास' या रिजनल नावेल' कहते। [14] आंचलिक उपन्यास प्रजातांत्रिक है। उनमें आस्था अभिव्यक्ति कि साधारण पुरुष और स्त्री भी इतने आकर्षक हो सकते है कि उपन्यास में चित्रण किया जा सके। इसमें समर्थ चित्रण होता है क्यों कि किसी भी चरित्र निर्माण वंश परम्परा और वातावरण दोनों महत्त्वपूर्ण योगदान होता है।[15] आंचलिक प्रवृत्ति वह दृष्टि है जिसके केंद्र में अमुक पात्र या चरित्र नहीं जितना स्वयम् वह भू भाग अंचल पात्र स्वयम् से इष्ट नहीं मानो समाष्टिजीवन की यथार्थता को उभार देने ही चरितार्थता है। [16]आंचलिक उपन्यास लिखना मानो हृदय में किसी प्रदेश कसमसाती जीवनानुभूति को वाणी देने का अनिवार्य प्रयास आंचलिक उपन्यास अंचल समग्र जीवन का है।[17] आंचलिक उपन्यास उपन्यास जिसमें उपन्यासकार किसी अंचल, जनपद, जाति या वर्ग के दिग्दर्शन करात जिसमें कदम कदम आंचलिकता का आग्रह रहता हो।[18]आंचलिक उपन्यासों में अंचल विशेष की माटी की सोंधी महक प्रकृति निर्बन्ध लोकसंस्कृति के छंद तथा लोकभाषा की ताजगी की मोहक छबियों कथा बिम्बों इस तरह से उभारा जाता कि पूरा अंचल अपनी समग्रता चित्रित हो उठता है। अमूर्त अंचल का सभिप्राय समूर्तन उसकी विशेषता है।[19] आंचलिक उपन्यास तो आंचल के समग्र जीवन का उपन्यास है। उसका सम्बन्ध जनपद होता है ऐसा नहीं वह जनपद की ही कथा है।[20]उपन्यासकार अंचल विशेष के अनुसार गांव कस्बे मुहल्ले को बनाकर वहाँ के लोगों आधार-व्यवहार जीवन पद्धती लोकभाषा दृष्टिकोण सूक्ष्म वर्णन करता तो वह आंचलिक उपन्यास होता है। [21]आंचलिक अर्थ का प्रयोग एक सिमित और किसी हद तक परिभाषिक अर्थ में किया गया है। आंचलिक उपन्यास हम उसे कहते हैं जिसमें अपरिचित भूमियों और अज्ञात जातियों के जन जीवन के वैविध्यपूर्ण चित्रण हो। आंचलिक उपन्यास की सबसे बड़ी विशेषता अपरिचित और किसी हद तक आदिम जातियों के जीवन में पाई जाती है।[22]

'आंचलिक उपन्यास' शब्द की चर्चा सर्वप्रथम जिस उपन्यास में प्राप्त होती है, उसके रचनाकार ने भी किसी विशिष्ट भू-भाग और उसके लोगों के चित्रण का संकेत किया है। मैला आंचल की भूमिका इस दृष्टि से आंचलिक उपन्यास की परिभाषा निर्माण में महत्त्वपूर्ण रही है। यह है मैला आंचल, एक आंचलिक उपन्यास

कथानक है पूर्णिया। पूर्णिया बिहार राज्य का एक जिला है.. मैंने इसके एक हिस्से के एक ही गांव को... पिछड़े गांव का प्रतीक मानकर इस उपन्यास का कथाक्षेत्र बनाया है।"

इसमें फूल भी है शूल भी धूल भी है गुलाल भी, कीचड़ भी है चन्दन भी, सुन्दरता भी है कुरूपता भी मैं किसी से भी दामन बचाकर निकाल नहीं पाया।[23] इस कथन से आंचलिक उपन्यास की कतिपय विशेषताएँ स्वयम् स्पष्ट है। इस आंचलिकता लेखक की सहज आत्मीयतापूर्ण दृष्टि है जिसमें शहरी आकर्षण और चमक दमक से दूर धरती का स्वच्छंद प्रांगणबसता है जहाँ वन्य कुसुम स्वयम् खिलते और अपनी आभा बिखरते है।

आंचलिक कथाकार किसी विशिष्ट क्षेत्र की धरती को अपने कथानक का आधार बनाता है और क्षेत्र की स्थिति का तटस्थ अंकन करता है। वर्णित अंचल से गहरी आत्मीयता प्राप्त रचनाकार ही श्रेष्ठ सर्जना कर सकता है। भौगोलिक वैशिष्ट्य के साथ साथ वर्णित अंचल की सामाजिक राजनीतिक एवम् सांस्कृतिक विशेषताओं का चित्रण आंचलिक कृति की अनिवार्यता है। आंचलिक कृतिकार अपना रचना के लिए क्षेत्रविशेष के चयन के साथ विशिष्ट कालखण्ड का भी चयन करता है। तब उस क्षेत्र में घटित राजनैतिक उथल पुथल सामाजिक क्रांति तथा धार्मिक स्थिति का चित्रांकन करता है। अंचलवासियों के परिवेश उनके जीवन स्तर और जीवन के प्रति उनकी अवधारणाओं आदि का तटस्थभाव से यथार्थवादी चित्रण आंचलिक कृति की अनिवार्यता है।आंचलिक भाषा ही आंचलिक एवम् अनांचलिक कृतियों के मध्य भेद स्पष्ट करती है। आंचलिक कथाकारों को स्थानीय पात्रों के संवाद और लोकसंस्कृति आदि के चित्रण में स्थानीय भाषा का व्यवहार करना पड़ता है। स्थानीय मुहावरों लोकोक्तियों आदि के प्रयोग से लेखक चित्रण को अधिक प्रामाणिक ओर सजीव बनाता है। लोकसंस्कृति आंचलिक रचना का प्राण है। लोक संस्कृति से तात्पर्य स्थानीय रीतिरिवाज, वस्त्रविन्यास पर्व त्यौहार, परम्परागत मान्यताएँ, धार्मिक रूढ़िया और विश्वास, लोकगीत और नृत्य तथा उनकी कला आदि से है। युग सत्यों और युगीन क्रिया कलापों तथा उसकी करवटों से उत्पन्न परिवर्तन का प्रभाव अंचल के जीवन में भी परिलक्षित होता है। उस परिवर्तन के प्रति जन मानस की प्रतिक्रिया तथा नवीन चेतना का पुरातनता से संघर्ष एवम् दोनों का सम्मीलन, प्रभाव आदि के वर्णन से रचनाकार अपनी कृति में सजीवता भरता है। पात्रों का स्थानीय होना भी आंचलिक रचना का मूलतत्व है। आंचलिक भाषा का प्रयोग, व्यवहार तथा सांस्कृतिक एवम् लोकमान्यताओं का उद्घाटन पात्रों द्वारा होने के कारण पात्रों की आंचलिकता सहज और अनिवार्य है।

इस तरह हम देखते हैं कि आंचलिक कथा रचना के लिए आंचलिक भाषा आंचलिक पात्र, लोक संस्कृति, युगीन चेतना का प्रभाव क्षेत्र की स्थिति और उसके जीवन का यथार्थवादी चित्रण आदि तत्वों की अनिवार्यता है। इन तत्वों की संयोजना ही किसी कृति को आंचलिक कृति सिद्ध करती है।

****

संदर्भ सूची:-

1. मेनियर विलियम, भाषा शब्दकोष, पृ.११
2. हिन्दी उपन्यास सिद्धांत और विवेचन स. महेन्द्र, पृ. १७८
3. पूर्णिया (अप्रैल १६६०) पं. राजनाथ पाण्डेय का लेख, पृ.६
4. डॉ. मक्खनलाल शर्मा, हिन्दी उपन्यास सिद्धांत और समीक्षा, पृ.११८-११६
5. प्रकाश वाजपेयी, हिन्दी के आंचलिक उपन्यास, पृ.६
6. राधेश्याम कौशिक, हिन्दी के आंचलिक उपन्यास, पृ.१३
7. डॉ. धीरेंद्र वर्मा (संपा.). हिन्दी साहित्य कोश, भाग-१, पृ.१४१
8. डॉ. सुषमा धवन, हिन्दी उपन्यास, पृ.८०
9. कांति वर्मा, स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी उपन्यास, पृ. १८४
10. डॉ. माखनलाल शर्मा, हिन्दी उपन्यास सिद्धांत और समीक्षा, पृ.३६०
11. डॉ. शशिभूषण सिंहल, हिन्दी उपन्यास की प्रवृत्तियाँ, पृ.८
12. डॉ. जगदीशचंद्र जोशी, हिन्दी गद्य साहित्य एक सर्वेक्षण, पृ. १६२
13. परिषद पत्रिका (अप्रैल १६६२). श्री. जगन्नाथ प्रसाद मिश्र का लेख, पृ.७५
14. आचार्य मोहन वल्लभ पंत, हिन्दी के आंचलिक उपन्यास' शीर्षक टंकित लेख, पृ. ३
15. दि इंग्लिश नावेल (वाल्टर एलन) के पृ.८ से दि इंग्लिश रीजनल नावेल नामक फाईलिस वैन्टले की पुस्तक से उद्धृत
16. जैनेन्द्र कुमार, साहित्य संदेश (उपन्यास), अंक १६५६, पृ.५०
17. डॉ. रामदरश मिश्र, सप्तसिन्धु, फरवरी १६६४
18. डॉ. राजकुमार पाण्डेय, साहित्यिक निबन्ध, पृ. २७५
19. डॉ. बच्चन सिंह, आधुनिक हिन्दी साहित्य का इतिहास, पृ.३६३
20. डॉ. रामदरश मिश्र, हिन्दी उपन्यास एक अन्तर्यात्रा, पृ. २२५
21. नागार्जुन, बलचनमा, पृ.५
22. नन्ददुलारे वाजपेयी, सारिका, अक्तूबर १६६१
23. फणीश्वरनाथ रेणु, मैला आंचल, प्रथम संस्करण की भूमिका